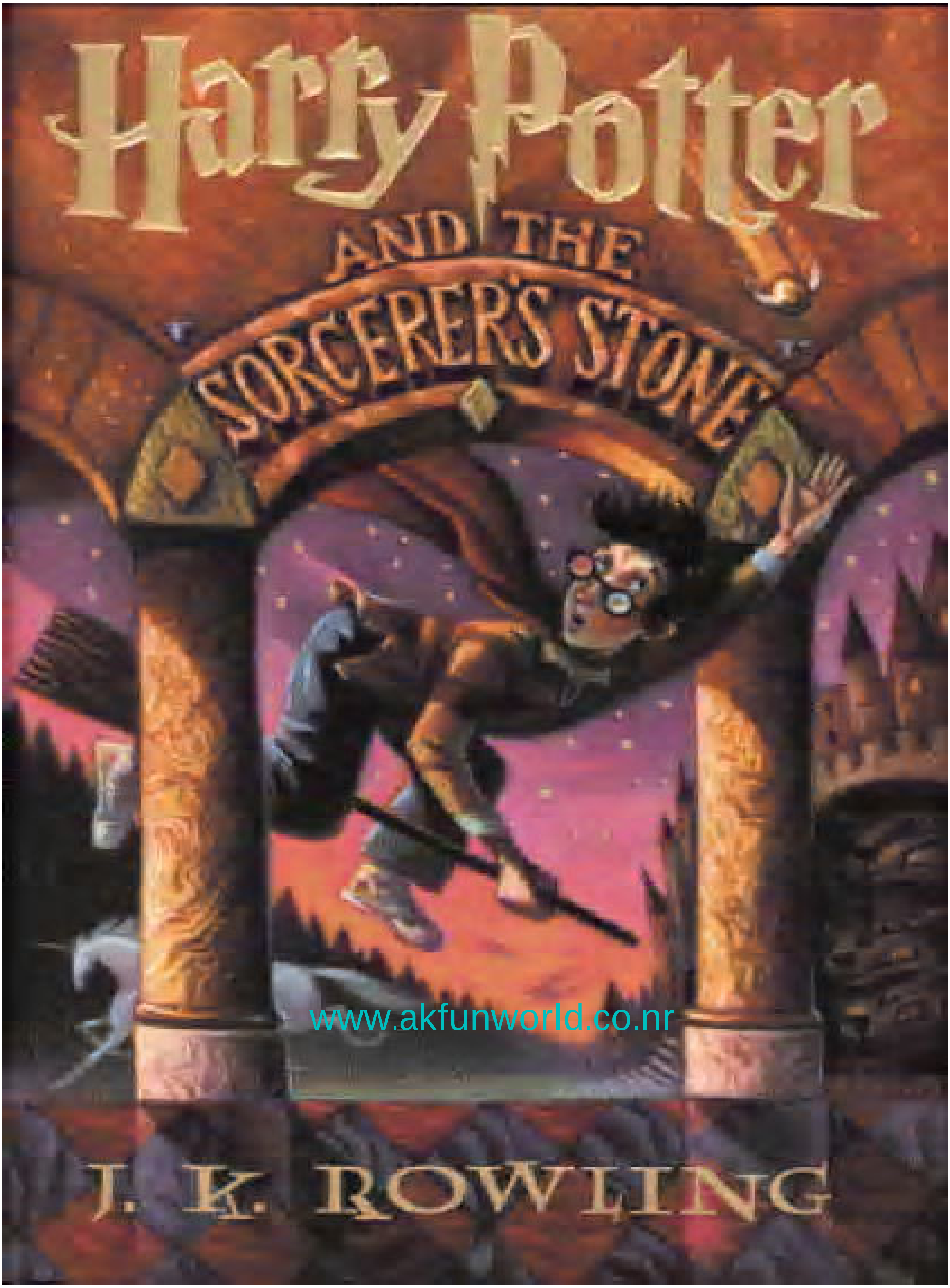

www.akfunworld.co.nr

जेसिका को, जिसे कहानियाँ पसंद हैं,

एन को, जिसे भी कहानियाँ पसंद हैं,

और डी को, जिसने यह सबसे पहले सुनी।

हैरी पॉटर और पारस पत्थर

अध्याय - एक
वह लड़का जो जिंदा बच गया

प्रिविट ड्राइव के मकान नंबर चार में रहने वाले मिस्टर और मिसेज़ डर्स्ली गर्व से कहते थे *हम तो पूरी तरह सामान्य लोग हैं* कोई सोच भी नहीं सकता था कि यह लोग किसी रहस्यमयी या अजीब चीज़ में उलझ सकते थे, क्योंकि वे इस तरह की बेतुकी बातों से दूर रहते थे।

मिस्टर डर्स्ली ग्रनिंग्स नाम की कंपनी के डायरेक्टर थे, जो ड्रिल बनाती थी। मिस्टर डर्स्ली मोटे-तगड़े थे और उनकी गर्दन तो जैसे थी ही नहीं, हालाँकि उनकी मूँछें बहुत बड़ी थीं। मिसेज डर्स्ली सुनहरे बालों वाली दुबली महिला थीं और उनकी गर्दन सामान्य से लगभग दुगुनी लंबी थी। यह लंबी गर्दन उनके बहुत काम आती थी, क्योंकि वे बगीचे की मुंडेर के पार ताक-झाँक करने में और पड़ोसियों की जासूसी करने में अपना बहुत सा समय बिताती थीं। उनका एक छोटा सा बेटा भी था, जिसका नाम था डडली और मिस्टर-मिसेज डर्स्ली का मानना था कि दुनिया में उससे अच्छा बच्चा हो ही नहीं सकता।

उनके पास वह सब कुछ था जो वे चाहते थे, पर उनकी ज़िंदगी में एक रहस्य भी था और उन्हें सबसे ज़्यादा डर इसी बात से लगता था कि कहीं वह रहस्य किसी को पता न चल जाये। वे यह सोच भी नहीं सकते थे कि अगर किसी को पॉटर परिवार के बारे में पता चल गया, तो उनका क्या होगा। मिसेज़ पॉटर मिसेज़ डर्स्ली की बहन थीं, परंतु वे कई सालों से एक-दूसरे से नहीं मिली थीं। सच तो यह था कि मिसेज़ डर्स्ली सबको यही बताती थीं कि उनकी कोई बहन ही नहीं थी, क्योंकि उनकी बहन और उसका निकम्मा पति उन लोगों से उतने ही अलग थे, जितना अलग होना संभव था। यह सोचकर ही डर्स्ली पति-पत्नी के होश उड़ जाते थे कि अगर पॉटर पति-पत्नी उनकी गली में आ गये, तो उनके पड़ोसी क्या कहेंगे। वे जानते थे कि उनका एक छोटा सा बेटा भी था, पर उन्होंने उसे कभी नहीं देखा था। यह बच्चा भी एक बड़ा कारण था, जिस वजह से वे पॉटर पति-पत्नी से दूर रहते थे। वे नहीं चाहते थे कि डडली इस तरह के बच्चे से मिले-जुले।

जब मिस्टर और मिसेज़ डर्स्ली उस बोझिल मंगलवार को सोकर उठे जहाँ से हमारी कहानी शुरू होती है, तो बादलों से भरे आसमान को देखकर कोई भी यह नहीं सोच सकता था कि पूरे देश में अजीबोग़रीब और रहस्यमयी घटनायें जल्दी ही होने वाली हैं। मिस्टर डर्स्ली ने ऑफिस जाने के लिए गुनगुनाते हुये अपनी सबसे बोरिंग टाई निकाली और मिसेज़ डर्स्ली चहकते हुये इधर-उधर की बातें करती रहीं; इसके साथ ही वे हल्ला मचा रहे डडली को ऊँची कुर्सी पर बिठाने के लिये उसके साथ कुश्ती भी लड़ती जा रही थीं।

उनमें से किसी को भी यह नहीं दिखा कि एक बड़ा सा भूरा उल्लू उनकी खिड़की के पास से पंख फड़फड़ाते हुये गुज़र गया।

साढ़े आठ बजे मिस्टर डर्स्ली ने अपना ब्रीफकेस उठाया, पत्नी का गाल थपथपाया और डडली को चूमने की कोशिश की, परंतु वे ऐसा नहीं कर पाये, क्योंकि डडली उस समय झुँझला रहा था और अपना नाश्ता दीवार पर फेंक रहा था। 'शैतान कहीं का,' मिस्टर डर्स्ली ने घर से निकलते समय हँसकर लाड़ से कहा। वे अपनी कार में बैठे और चार नंबर के पोर्च से बाहर आ गये।

सड़क के मोड़ पर डर्स्ली को पहली अजीब चीज़ दिखी - एक बिल्ली, जो नक़्शा पढ़ रही थी। एक पल को तो

डर्स्ली यह समझ ही नहीं पाये कि उन्होंने क्या देखा था - फिर उन्होंने सिर झटका और दुबारा देखा। एक भूरी बिल्ली प्रिविट ड्राइव के मोड़ पर खड़ी थी, परंतु नक़्शा कहीं नहीं दिख रहा था। उनके दिमाग़ में भी कैसे अजीब विचार आ जाते हैं? हो सकता है रोशनी की वजह से उनकी आँखों को धोखा हुआ हो। मिस्टर डर्स्ली ने आँखें झपकायीं और बिल्ली को घूरा। बिल्ली ने भी पलटकर उन्हें घूरा। जब मिस्टर डर्स्ली मोड़ पर मुड़े और सड़क पर आगे बढ़े, तो उन्होंने कार के शीशे में बिल्ली को देखा। बिल्ली अब उस साइनबोर्ड को पढ़ रही थी, जिस पर लिखा था *प्रिविट ड्राइव* - नहीं, नहीं, वह साइनबोर्ड को *देख रही थी*; बिल्लियाँ न तो नक़्शे देख सकती थीं, न ही साइनबोर्ड पढ़ सकती थीं। मिस्टर डर्स्ली ने अपने कंधे उचकाये और बिल्ली को अपने दिमाग़ से बाहर निकाल दिया। जब वे शहर की तरफ़ बढ़े, तो उनके दिमाग़ में और कुछ भी नहीं था - ड्रिल के उस बड़े ऑर्डर के सिवाय, जो उन्हें उस दिन मिलने की उम्मीद थी।

परंतु शहर के करीब पहुँचते-पहुँचते उन्होंने कुछ ऐसा देखा, जिसने उनके दिमाग़ से ड्रिल का विचार बाहर निकाल दिया। हर सुबह की तरह जब वे ट्रैफिक जाम में फँसे, तो उनका ध्यान इस तरफ गया कि आज बहुत से लोग अजीब कपड़े पहनकर घूम रहे थे। चोगे पहने लोग हर तरफ दिख रहे थे। मिस्टर डर्स्ली अजीब कपड़े पहनने वाले लोगों को पसंद नहीं करते थे - आजकल के जवान लड़के-लड़कियाँ भी कैसे ऊटपटाँग कपड़े पहनते हैं! उन्होंने सोचा यह कोई बेवकूफी भरा नया फैशन होगा। उन्होंने अपनी उँगलियों से स्टियरिंग व्हील पर तबला बजाया और तभी उनकी निगाह पास में खड़े कुछ अजीब लोगों के झुंड पर पड़ी। वे लोग रोमांचित होकर आपस में कानाफूसी कर रहे थे। मिस्टर डर्स्ली आगबबूला हो गये जब उन्होंने देखा कि उनमें से दो तो बिलकुल जवान नहीं थे : अरे, उस आदमी की उम्र तो मुझसे भी ज्यादा होगी और उसे शर्म नहीं आती कि वह गहरा हरा चोगा पहने है। उसकी यह मजाल! परंतु तभी मिस्टर डर्स्ली ने सोचा कि शायद इसका संबंध किसी मूर्खतापूर्ण काम से हो - हो सकता है यह लोग किसी चीज़ के लिये चंदा इकट्ठा कर रहे हों ... हाँ, यही होगा। ट्रैफिक फिर से चालू हो गया, और कुछ मिनट बाद मिस्टर डर्स्ली कंपनी की कार पार्किंग में पहुँच गये और उनका दिमाग़ एक बार फिर ड्रिल में उलझ गया।

मिस्टर डर्स्ली नौवीं मंज़िल पर अपने ऑफिस में हमेशा खिड़की की तरफ पीठ करके बैठते थे। अगर ऐसा नहीं होता तो उस सुबह उन्हें ड्रिल पर अपना ध्यान लगाये रखने में कठिनाई होती। वे भरी दोपहर में तेज़ी से उड़ते हुये उल्लुओं को नहीं देख पाये, परंतु नीचे सड़क पर खड़े लोग उन उल्लुओं को देखकर हैरान हो रहे थे। जब एक के बाद एक उल्लू तेज़ी से उड़कर गये, तो लोग उँगली से इशारा कर-करके मुँह फाड़े उन्हें देखते रहे। उनमें से ज़्यादातर लोगों ने तो रात में भी कभी उल्लू नहीं देखा था। बहरहाल, मिस्टर डर्स्ली की सुबह पूरी तरह सामान्य गुज़री, जिसमें उल्लुओं का नामोनिशान नहीं था। उन्होंने पाँच लोगों को डाँटा, कई ज़रूरी टेलीफोन किये और वे फोन पर भी चीख़ते-चिल्लाते रहे। लंच के समय तक वे बहुत अच्छे मूड में थे। लंच में उन्होंने सोचा कि पैर सीधे कर ले और सड़क के पार सामने वाली बेकरी से अपने लिये स्वीट ब्रेड ले आयें।

चोगा पहने लोगों के बारे में वे पूरी तरह भूल चुके थे, परंतु बेकरी के पास वे एक बार फिर उनके पास से गुज़रे। उनके पास से गुज़रते समय मिस्टर डर्स्ली ने उन्हें गुस्से से घूरा। न जाने क्यों, उन्हें देखकर वे थोड़े परेशान से हो गये। ये लोग भी रोमांचित होकर कानाफूसी कर रहे थे और उनके हाथ में चंदा माँगने वाला डिब्बा भी नहीं दिख रहा था। वापस लौटते समय मिस्टर डर्स्ली की थैली में एक बड़ी स्वीट ब्रेड थी और जब वे एक बार फिर उन लोगों के पास आये, तो उन्हें उनकी बातचीत के कुछ शब्द सुनाई दिये।

'पॉटर परिवार, हाँ, सही है, मैंने यही सुना है -'

'हाँ, उनका बेटा हैरी -'

मिस्टर डर्स्ली के पैरों को जैसे लकवा मार गया। डर के मारे उनके होश उड़ गये। उन्होंने कानाफूसी करने वालों की तरफ देखा, जैसे उनसे कुछ पूछना चाहते हों, परंतु फिर उन्होंने इसी में अपनी भलाई समझी कि ऐसा न किया जाये।

उन्होंने सड़क के पार दौड़ लगा दी, धड़धड़ाते हुए अपने ऑफिस में घुसे, अपनी सेक्रेटरी को फटकारा कि वह

उन्हें डिस्टर्ब न करे, झपटकर फोन उठाया और घर का नंबर लगभग पूरा डायल कर लिया था कि तभी उन्होंने अपना इरादा बदल दिया। उन्होंने रिसीवर दुबारा नीचे रख्र दिया और अपनी मूँछों पर हाथ फेरने लगे। वे सोच रहे थे ... नहीं, नहीं, वे भी कितनी बड़ी बेवकूफी करने जा रहे थे। पॉटर नाम के बहुत से लोग होते हैं। उन्हें विश्वास था कि पॉटर नाम के ऐसे भी कई लोग होंगे जिनके बेटे का नाम हैरी होगा। और अगर देख्रा जाये तो उन्हें यह भी पक्का पता नहीं था कि उनके भांजे का नाम हैरी *ही था* । उन्होंने उसे कभी नहीं देख्रा था। उसका नाम हार्वे या हैरॉल्ड भी तो हो सकता था। मिसेज़ डर्स्ली को चिंता में डालने से क्या फायदा? अपनी बहन का नाम सुनते ही वे हमेशा बहुत परेशान हो जाती थीं। और इसमें मिसेज़ डर्स्ली की भी क्या गलती थी - अगर *उनकी* अपनी बहन इस तरह की होती ... परंतु फिर भी, चोगा पहने लोग ...

उस दोपहर ड्रिल पर ध्यान लगाये रख्रने में उन्हें बहुत कठिनाई हुई और जब वे पाँच बजे ऑफिस की बिल्डिंग से बाहर निकले, तो इतने परेशान थे कि गेट से निकलते ही एक आदमी से टकरा गये।

'सॉरी,' वे हड़बड़ाकर बोले, क्योंकि उनकी टक्कर से एक ठिगना बूढ़ा आदमी लड़ख्रड़ाकर लगभग गिर गया था। कुछ सेकंड बाद जाकर मिस्टर डर्स्ली का ध्यान इस तरफ गया कि उस आदमी ने बैंगनी चोगा पहन रख्रा था। टकराने और ज़मीन पर लगभग गिर जाने के बाद भी वह कतई नाराज या परेशान नहीं दिख्र रहा था। इसके बजाय उसके चेहरे पर चौड़ी मुस्कान ख्रिली थी। उसने अपनी चिंचियाती सी काँपती आवाज़ में कहा और उसकी आवाज़ इतनी अजीब थी कि आसपास के लोग उसे घूरने लगे : 'कोई बात नहीं! आज मुझे कोई भी चीज़ परेशान नहीं कर सकती! ख़ुशियाँ मनाओ, क्योंकि तुम-जानते-हो-कौन अब आख़िरकार चला गया है! आज का दिन इतनी ख़ुशी का है कि तुम्हारे जैसे मगलुओं को भी जश्न मनाना चाहिये!'

और फिर उसे बूढ़े ने मिस्टर डर्स्ली की कमर में हाथ डालकर उन्हें गले लगाया और वहाँ से चल दिया।

मिस्टर डर्स्ली वहीं किसी पेड़ की तरह ख्रड़े रह गये। एक अजनबी ने उन्हें गले लगाया था। यही नहीं, उसने उन्हें मगलू भी कहा था, चाहे उसका जो भी मतलब होता हो। उनके दिमाग़ के पुर्ज़े हिल चुके थे। वे अपनी कार की तरफ लपके और घर की तरफ चल दिये। उन्हें आशा थी कि यह सब बातें उनकी कल्पना की उपज ही होंगी, और यह आशा उन्होंने आज से पहले कभी नहीं की थी, क्योंकि वे कल्पना की उड़ान को पसंद नहीं करते थे।

जब वे अपने घर के पोर्च में अंदर घुसे, तो उन्होंने जो पहली चीज़ देख्री, उसे देख्रकर उनका दिमाग़ और ख़राब हो गया। जिस भूरी बिल्ली को उन्होंने सुबह देख्रा था, वह अब उनके बगीचे की मुंडेर पर बैठी हुई थी। उन्हें पूरा विश्वास था कि यह वही बिल्ली थी, क्योंकि इसकी आँख्रों के चारों तरफ भी उसी तरह के निशान थे।

'शू!' मिस्टर डर्स्ली ज़ोर से चिल्लाये।

बिल्ली टस से मस नहीं हुई। इसके बजाय उसने मिस्टर डर्स्ली की तरफ घूरकर देख्रा। मिस्टर डर्स्ली हैरान रह गये, क्या यह आम बिल्लियों जैसा व्यवहार था ? अपने आपको सँभालने की कोशिश करते हुए वे घर के अंदर घुसे। अब भी उनका यह पक्का इरादा था कि वे अपनी पत्नी को कुछ भी नहीं बतायेंगे।

मिसेज़ डर्स्ली का दिन अच्छा और सामान्य गुज़रा था। उन्होंने डिनर पर अपने पति को बताया कि पड़ोसन की अपनी बेटी के साथ क्या समस्यायें चल रही हैं और डडली ने एक नया वाक्य सीख्रा है 'नहीं करूँगा' । मिस्टर डर्स्ली ने सामान्य व्यवहार करने की कोशिश की। जब डडली को सुला दिया गया, तो वे समय रहते ड्रॉइंग रूम में गये, ताकि रात के समाचार की अंतिम ख़बर सुन सकें :

'और अंत में, हर जगह के लोग बता रहे हैं कि इस देश के उल्लुओं की हरकतें आज बहुत अजीब थीं। हालाँकि उल्लू आम तौर पर रात को ही शिकार करते हैं और दिन की रोशनी में शायद ही कभी दिख्रते हैं, परंतु आज सूरज उगने के बाद से सैकड़ों उल्लू हर दिशा में उड़ते दिख्राई दिये। विशेषज्ञ यह नहीं बता पा रहे हैं कि उल्लुओं ने अचानक अपने

सोने का समय क्यों बदल दिया है। समाचार पढ़ने वाले ने मुस्कराते हुये कहा। 'बड़ी अजीब बात है। और अब, मौसम की जानकारी जिम मैक्गफिन से। जिम, क्या आज रात भी उल्लुओं की बारिश होने की संभावना है ?'

'हलो, टेड,' मौसम विशेषज्ञ ने कहा, 'मैं उसके बारे में तो नहीं जानता, परंतु आज सिर्फ उल्लुओं की हरकतें ही अजीब नहीं रहीं। केंट, यॉर्कशायर और डन्डी के दर्शकों ने आज मुझे फोन करके बताया कि मैंने कल जिस बारिश का वादा किया था, उसकी जगह आज आसमान से उल्काओं की बारिश हुई। शायद लोग बॉनफायर नाइट का त्यौहार थोड़ी जल्दी मना रहे हैं - यह अगले सप्ताह है दोस्तो, परंतु आज की रात निश्चित रूप से पानी बरसेगा।'

मिस्टर डर्स्ली अपनी कुर्सी पर बर्फ की तरह जमे रह गये। पूरे ब्रिटेन में उल्काओं की बारिश ? दिन की रोशनी में उल्लुओं का उड़ना ? हर जगह चोगों में घूम रहे रहस्यमय लोग? और पॉटर... पॉटर परिवार के बारे में कानाफूसी...

मिसेज़ डर्स्ली दो कप चाय लेकर ड्रॉइंग रूम में आयीं। अब बताये बिना कोई चारा नहीं था। उन्हें अपनी पत्नी को कुछ तो बताना ही पड़ेगा। उन्होंने घबराते हुये अपना गला साफ किया, 'अह - पेटूनिया डियर - हाल में तुम्हारी बहन की कोई खबर मिली है क्या?'

जैसा उन्होंने सोचा था, यह सुनकर मिसेज़ डर्स्ली को झटका भी लगा और गुस्सा भी आया। आम तौर पर वे लोग यही जताते थे कि मिसेज़ डर्स्ली की कोई बहन नहीं थी।

'नहीं,' उन्होंने तीखा जवाब दिया, 'क्यों?'

'समाचार में अजीब ख़बरें आ रही थीं,' मिस्टर डर्स्ली ने सहमी हुई आवाज़ में कहा। 'उल्लू, उल्कायें ... और शहर में आज बहुत से अजीब तरह के लोग घूम रहे थे ...'

'तो?' मिसेज़ डर्स्ली ने तमतमाकर पूछा।

'तो, मैंने सोचा, मैंने सोचा ...शायद ...कहीं हो न हो ...इसका संबंध ...*उन लोगों से* ...उनकी तरह के लोगों से तो नहीं है।'

मिसेज़ डर्स्ली होंठ सिकोड़कर अपनी चाय पीती रहीं। मिस्टर डर्स्ली ने विचार किया कि क्या उनमें अपनी पत्नी को यह बताने की हिम्मत थी कि उन्होंने 'पॉटर' का नाम सुना है। अंत में वे इस नतीजे पर पहुँचे कि उनमें इतनी हिम्मत नहीं थी। इसके बजाय वे जितने सामान्य ढंग से कह सकते थे, उन्होंने कहा, 'उनका बेटा - उसकी उम्र भी अपने डडली जितनी ही होगी, है ना?'

'मेरे ख़्याल से उतनी ही होना चाहिये,' मिसेज डर्स्ली ने कड़ककर कहा।

'वैसे उसका नाम क्या है? हॉवर्ड, है ना?'

'हैरी। और मेरे ख़्याल से यह बहुत ही घटिया और सड़कछाप नाम है।'

'और नहीं तो क्या,' मिस्टर डर्स्ली बोले और उनका दिल बुरी तरह डूबता जा रहा था। 'बिलकुल ठीक कहा, मेरा भी यही ख़्याल है।'

जब वे लोग सोने के लिये ऊपर वाली मंज़िल पर गये, तो इसके बाद मिस्टर डर्स्ली इस विषय पर एक शब्द भी नहीं बोले। जब मिसेज़ डर्स्ली बाथरूम में थीं, तो मिस्टर डर्स्ली चुपके से बेडरूम की खिड़की के पास गये और उन्होंने सामने वाले बगीचे में झाँका। बिल्ली अब भी वहीं थी। वो प्रिविट ड्राइव के मोड़ पर नजरें गड़ाये थी जैसे उसे किसी का इंतज़ार था!

क्या यह उनके मन का वहम था ? या फिर इस सबका पॉटर परिवार से कोई संबंध था ? अगर ऐसा हो ... और अगर किसी को यह पता चल जाये कि उनका संबंध ऐसे लोगों से है तो ... बहरहाल यह तय था कि वे यह सहन

नहीं कर पायेंगे।

मिस्टर और मिसेज़ डर्स्ली बिस्तर पर लेट गये। मिसेज़ डर्स्ली तो तत्काल सो गयीं, परंतु मिस्टर डर्स्ली जागते रहे और मन ही मन सारी बातें याद करते रहे। सोने से पहले उनके मन में तसल्ली देने वाला आख़िरी विचार यही था कि अगर पॉटर परिवार का इन अजीब घटनाओं से कोई संबंध हो भी, तो भी डरने की कोई बात नहीं थी, क्योंकि वे उनके और मिसेज़ डर्स्ली के पास भला क्यों आयेंगे? पॉटर पति-पत्नी बहुत अच्छी तरह से जानते थे कि उनके और उन जैसे लोगों के बारे में पेटूनिया और वे किस तरह के विचार रखते थे ... मिस्टर डर्स्ली को समझ में नहीं आ रहा था कि वे और पेटूनिया किसी ऐसी चीज़ में किस तरह उलझ सकते थे जो इस समय हो रही होगी। उन्होंने उबासी ली और करवट बदली। इसका उन पर कोई असर नहीं हो सकता था ...

उनका अंदाजा कितना ग़लत था।

मिस्टर डर्स्ली भले ही कच्ची नींद में सो गये थे, पर बाहर मुंडेर पर बैठी बिल्ली की आँखों में नींद का नामोनिशान नहीं था। वो अब भी किसी मूर्ति की तरह स्थिर बैठी थी और पलक झपकाये बिना प्रिविट ड्राइव के दूर वाले मोड़ पर नज़रें गड़ाये थी। जब बगल वाली सड़क पर एक कार का दरवाजा भड़ाक से बंद हुआ तो भी वो नहीं हिली, न ही तब जब दो उल्लू उसके सिर के ऊपर से उड़ते हुये गये। दरअसल, लगभग आधी रात के करीब ही ये बिल्ली अपनी जगह से हिली।

बिल्ली जिस मोड़ पर नजरें जमाये थी, वहाँ एक आदमी प्रकट हुआ। वह इतने अचानक और चुपचाप आया था कि देखने वाले को लग सकता था जैसे वह ज़मीन के भीतर से निकला हो। बिल्ली की पूँछ फड़की और उसकी आँखें सिकुड़ गयीं।

इस तरह का आदमी प्रिविट ड्राइव में पहले कभी नहीं दिखा था। वह लंबा, दुबला और बहुत बूढ़ा था। उसकी उम्र उसके बालों और दाढ़ी की सफेदी से पता चलती थी, जो दोनों ही इतने लंबे थे कि वह उन्हें अपनी बेल्ट के नीचे खोंस सकता था। वह लंबा दुशाला ओढ़े था, उसका जामुनी चोगा ज़मीन पर घिसट रहा था और उसने ऊँची एड़ी के बकल वाले जूते पहन रखे थे। आधे चाँद के आकार वाले चश्मे के पीछे से दिखती उसकी नीली आँखें साफ और चमकदार थीं। उसकी नाक बहुत लंबी और मुड़ी हुई थी, जैसे उसे कम से कम दो बार तोड़ा गया हो। इस आदमी का नाम था एल्बस डम्बलडोर।

एल्बस डम्बलडोर को शायद इस बात का एहसास नहीं था कि वे अभी-अभी एक ऐसी सड़क पर आ गये थे, जहाँ उनके नाम से लेकर उनके जूते तक किसी भी चीज़ को पसंद नहीं किया जाता। वे अपने चोगे में हाथ डालकर टटोल रहे थे, जैसे कुछ ढूँढ़ रहे हों। परंतु उन्हें इस बात का एहसास हो गया कि कोई उन्हें देख रहा था, क्योंकि उन्होंने अचानक बिल्ली की तरफ देखा, जो सड़क के दूसरे छोर से अब भी उन्हें घूर रही थी। न जाने क्यों, बिल्ली को देखकर उन्हें ख़ुशी हुई। वे हँसे और धीरे से बोले, 'मुझे मालूम होना चाहिए था।'

वे जिस चीज़ की तलाश कर रहे थे वो उन्हें अंदर वाली जेब में मिल गयी। यह चाँदी के सिगरेट लाइटर की तरह दिख रहा था। उन्होंने उसे खोला और हवा में लहराते हुए क्लिक किया। सबसे पास वाला सड़क का लैंप तड़ से बंद हो गया। उन्होंने एक बार फिर क्लिक किया - अगला लैंप भी बुझ गया। उन्होंने अपने बत्ती बुझाने वाले यंत्र को बारह बार क्लिक किया और कुछ समय बाद पूरी सड़क पर सिर्फ दो छोटी रोशनियाँ ही बची थीं : दूर बैठी बिल्ली की आँखें, जो उन्हें देख रही थीं। अगर कोई इस वक़्त अपनी खिड़की से बाहर झाँकता, चाहे चमकदार आँखों वाली मिसेज़ डर्स्ली ही क्यों न होतीं, तो भी वो यह नहीं देख सकता था कि नीचे फुटपाथ पर क्या हो रहा था। डम्बलडोर ने बत्ती बुझाने वाले यंत्र को वापस अपने चोगे में रख लिया और सड़क पर मकान नंबर चार की तरफ बढ़े, जहाँ वे बिल्ली की बगल में मुंडेर पर बैठ गये। उन्होंने बिल्ली की तरफ नहीं देखा, परंतु एक पल बाद उन्होंने बिल्ली से कहा।

'प्रोफेसर मैक्गॉनेगल, आप यहाँ क्या कर रही हैं?'

वे बिल्ली की तरफ देखकर मुस्कराये, परंतु भूरी बिल्ली ग़ायब हो चुकी थी। बिल्ली के बजाय वे एक गंभीर सी दिखने वाली महिला की तरफ देखकर मुस्करा रहे थे, जो उसी तरह का चौकोर चश्मा पहने थी, जिस तरह के निशान बिल्ली की आँखों के चारों तरफ थे। वह भी एक चोगा पहने थी, जो गहरे हरे रंग का था। उसके बाल जूड़े में कसकर बँधे थे। साफ नजर आ रहा था कि वह परेशान थी।

'आप कैसे समझे कि वो बिल्ली मैं ही थी?' उन्होंने पूछा।

'माई डियर प्रोफेसर, मैंने आज तक किसी बिल्ली को इतना तनकर बैठे नहीं देखा।'

'अगर आपको दिन भर ईंट की मुंडेर पर बैठना पड़ता, तो आप भी ऐसे ही तनकर बैठते।' प्रोफेसर मैक्गॉनेगल ने कहा।

'दिन भर? जबकि आप भी जश्न मना सकती थीं ? यहाँ आते समय मैं रास्ते में दर्जन भर दावतों और समारोहों के पास से होता हुआ आ रहा हूँ।'

प्रोफेसर मैक्गॉनेगल गुस्से से गुर्रायीं।

'अरे हाँ, सब जश्न मना रहे हैं,' उन्होंने बेचैन होकर कहा, 'वैसे समझदारी इसी में होती कि वे थोड़े सावधान रहते, परंतु नहीं - यहाँ तक कि मगलू भी जान गये हैं कि कोई अजीब चीज़ हुई है। उनके समाचारों में यह ख़बर थी।' उन्होंने अपने सिर को डर्स्ली के अँधेरे ड्रॉइंग रूम की खिड़की की तरफ झटके से मोड़ा। 'मैंने समाचार सुने थे। उल्लुओं के झुंड ... उल्कायें ... वे लोग पूरी तरह मूर्ख नहीं हैं। उन्हें पता चलना ही था। केंट में उल्काओं की बारिश - मैं शर्त लगा सकती हूँ यह डीडेलस डिगल का काम होगा। उसमें धेले भर की भी अकल नहीं है।'

'आप उन्हें दोष कैसे दे सकती हैं,' डम्बलडोर ने नर्मी से कहा। 'ग्यारह साल से हमारे पास जश्न मनाने की कोई वजह ही नहीं थी।'

'मैं जानती हूँ,' प्रोफेसर मैक्गॉनेगल ने चिढ़ते हुये कहा, 'परंतु इसका मतलब यह तो नहीं कि लोग बेवकूफी पर ही उतर आयें। लोग सरासर लापरवाही कर रहे हैं; उन्होंने मगलुओं जैसे कपड़े तक नहीं पहने हैं, चोगे पहनकर भरी दोपहर में सड़कों पर घूम रहे हैं और अफवाहें फैला रहे हैं।'

फिर उन्होंने डम्बलडोर पर तीखी, तिरछी निगाह डाली, मानो उम्मीद कर रही हों कि वे कुछ कहेंगे, परंतु चूँकि उन्होंने ऐसा नहीं किया इसलिये वे आगे बोलती रहीं : 'कितना बढ़िया रहेगा अगर जिस दिन तुम-जानते-हो-कौन आख़िरकार ग़ायब हो गया है, उसी दिन मगलुओं को हमारे बारे में पता चल जाये। मुझे लगता है वह सचमुच *चला गया है,* है ना डम्बलडोर?'

'लगता तो ऐसा ही है,' डम्बलडोर ने कहा। 'हमें बहुत सी चीज़ों के लिये ऊपर वाले का एहसान मानना चाहिये। क्या आप शर्बत लेमन लेंगी?'

'क्या?'

'शर्बत लेमन। एक तरह की मगलू मिठाई, जो मुझे बहुत पसंद है।'

'नहीं धन्यवाद,' प्रोफेसर मैक्गॉनेगल ने ठंडे स्वर में कहा, मानो कहना चाहती हों यह भी कोई वक़्त है शर्बत लेमन खाने का। 'जैसा मैंने कहा, अगर तुम-जानते-हो-कौन *चला भी गया हो -'*

'माई डियर प्रोफेसर, कम से कम आप जैसी समझदार महिला को तो उसका नाम लेना चाहिये! यह ''तुम-जानते-हो-कौन'' की बकवास छोड़िये! पिछले ग्यारह साल से मैं लोगों को यह समझाने की कोशिश कर रहा हूँ कि वे उसे उसके असली नाम से बुलायें : *वोल्डेमॉर्ट* ।' प्रोफेसर मैक्गॉनेगल पीछे हटीं, परंतु डम्बलडोर दो शर्बत लेमन निकालने में लगे थे इसलिये वे उनकी तरफ नहीं देख रहे थे। 'अगर हम कहते रहें ''तुम-जानते-हो-कौन,'' ''तुम-जानते-हो-कौन'',

तो समझना बहुत मुश्किल हो जाता है। मुझे कभी नहीं लगा कि वोल्डेमॉर्ट का नाम लेने में डरने की कोई वजह है।'

'मैं जानती हूँ कि आप नहीं डरते,' प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने कहा। उनके स्वर में आधी तारीफ़ और आधी उलझन साफ़ सुनाई दे रही थी। 'आपकी बात अलग है। सब जानते हैं कि आप ही वह अकेले आदमी हैं जिससे तुम-जानते-हो-, अरे, अच्छा, *वोल्डेमॉर्ट* - डरता था।'

'आप मेरी ज़रूरत से ज़्यादा तारीफ़ कर रही हैं,' डम्बलडोर ने शांति से कहा। 'वोल्डेमॉर्ट में ऐसी शक्तियाँ हैं जो मुझमें कभी नहीं हो सकतीं।'

'सिर्फ़ इसलिये, क्योंकि आप इतने - *महान* हैं कि आप उनका इस्तेमाल नहीं करना चाहते।'

'मेरी किस्मत अच्छी है कि आज अँधेरा है। मैं तब से इतना कभी नहीं शर्माया जब मैडम पॉमफ्री ने मेरे नये मफ़लर की तारीफ़ की थी।'

प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने डम्बलडोर को घूरकर देखा और कहा, 'उल्लुओं की तो छोड़िये, उससे भी तेज़ रफ़्तार से *अफ़वाहें* चारों तरफ़ उड़ रही हैं। आप जानते हैं लोग क्या कह रहे हैं ? कि वह क्यों ग़ायब हो गया ? कि आख़िर किस चीज़ ने उसे रोक दिया?'

ऐसा लग रहा था जैसे प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल उस मुद्दे पर पहुँच गयी थीं, जिस पर चर्चा करने के लिये वे सबसे ज़्यादा बेचैन थीं। वह असली कारण, जिसकी वजह से वे ठंडी सख़्त मुंडेर पर दिन भर बैठकर इंतज़ार कर रही थीं, क्योंकि न तो बिल्ली के रूप में, न ही महिला के रूप में उन्होंने डम्बलडोर पर पहले इतनी पैनी निगाह डाली थी जितनी कि वे इस समय डाल रही थीं। यह बात साफ़ थी कि चाहे 'लोग' कुछ भी कह रहे हों, वे उनकी बात पर तब तक यकीन नहीं करने वालीं, जब तक कि डम्बलडोर ख़ुद न कह दें कि यह सच था। परंतु डम्बलडोर इस समय एक और शर्बत लेमन छाँट रहे थे और उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।

प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने ज़ोर देकर आगे कहा, 'लोग *कह रहे हैं* कि वोल्डेमॉर्ट कल रात को गॉडरिक हौलो में पॉटर परिवार की तलाश में गया था। अफ़वाह यह है कि लिली और जेम्स पॉटर - कि वे लोग - *मर चुके* हैं।'

डम्बलडोर ने सिर झुकाया। प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल के मुँह से आह निकल गयी।

'लिली और जेम्स ... मुझे विश्वास नहीं हो रहा है ... मैं इस पर विश्वास नहीं करना चाहती थी ... ओह, एल्बस...'

डम्बलडोर आगे बढ़े और उन्होंने प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल का कंधा थपथपाया। 'मैं जानता हूँ ... मैं जानता हूँ ...' उन्होंने भारी आवाज़ में कहा।

आगे बोलते समय प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल की आवाज़ थरथरा रही थी। 'यही नहीं, लोग तो यह भी कह रहे हैं कि उनके बेटे हैरी पॉटर को भी मारने की कोशिश की, परंतु - वह उसे नहीं मार पाया। वह उस छोटे बच्चे को नहीं मार पाया। कोई नहीं जानता कि क्यों या कैसे, परंतु लोग कह रहे हैं कि जब वोल्डेमॉर्ट हैरी पॉटर को नहीं मार पाया, तो उसकी शक्ति नष्ट हो गयी - और इसीलिये वह ग़ायब हो गया है।'

डम्बलडोर ने उदास होकर सिर हिलाया।

'यह - यह *सच* है ?' प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने हकलाते हुये कहा। 'जब उसने इतना कुछ किया था ... जब उसने इतने सारे लोगों को मार डाला था ... इसके बाद भी वह एक छोटे से बच्चे को नहीं मार पाया ? बड़ी हैरानी की बात है ... उसे रोकने वाला कौन था ... परंतु भगवान के लिये मुझे यह बतायें कि हैरी कैसे बच गया ?'

'हम सिर्फ़ अंदाज़ा लगा सकते हैं,' डम्बलडोर ने कहा। 'शायद हम इसका कारण कभी नहीं जान पायेंगे।'

प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने जाली वाला रुमाल निकाला और चश्मे के नीचे अपनी आँखें पोंछीं। डम्बलडोर ने गहरी साँस खींचते हुये अपनी जेब से एक सुनहरी घड़ी निकाली और उसे ध्यान से देखा। यह घड़ी बहुत विचित्र थी, क्योंकि इसमें बारह काँटे थे, पर अंक एक भी नहीं था। इसके बजाय इसके किनारे पर छोटे ग्रह घूम रहे थे। बहरहाल, इससे डम्बलडोर को कुछ समझ में आया होगा, क्योंकि उन्होंने इसे वापस अपनी जेब में रख लिया और कहा, 'हैग्रिड को देर हो गयी। वैसे मुझे लगता है उसी ने आपको बताया होगा कि मैं यहाँ आने वाला हूँ।'

'हाँ,' प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने कहा। 'और मुझे नहीं लगता आप मुझे यह बतायेंगे कि आप कहीं और जाने के बजाय यहाँ *क्यों* आये हैं ?'

'मैं हैरी को उसके अंकल-आंटी के पास छोड़ने आया हूँ। अब उसके परिवार के नाम पर सिर्फ़ यही लोग बचे हैं।'

'आप यह तो नहीं कहना चाहते - आपका इशारा उन लोगों की तरफ़ तो नहीं है जो *यहाँ* रहते हैं?' प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने चीख़ते हुये मकान नंबर चार की तरफ़ इशारा किया और वे मुंडेर से नीचे कूद गयीं। 'डम्बलडोर - आप ऐसा नहीं कर सकते। मैंने दिन भर इन लोगों को देखा है। दुनिया में आपको ऐसे दो लोग नहीं मिल सकते जो हमसे इतने अलग हों। और उनका एक बेटा भी है - मैंने देखा कि वह अपनी माँ को पूरी सड़क पर लात मारता जा रहा था और मिठाई खाने की ज़िद कर रहा था। हैरी पॉटर यहाँ आकर रहेगा!'

'यह उसके लिये सबसे अच्छी जगह है,' डम्बलडोर ने थोड़ी कड़क आवाज़ में कहा। 'जब वह थोड़ा बड़ा हो जायेगा, तो उसके अंकल-आंटी उसे सब कुछ समझा देंगे। मैंने उनके लिये एक चिट्‌ठी लिख दी है।'

'चिट्‌ठी?' प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने मरी हुई आवाज़ में दोहराया और वे एक बार फिर मुंडेर पर बैठ गयीं। 'डम्बलडोर, क्या आपको सचमुच लगता है कि आप चिट्‌ठी में सारी बातें समझा सकते हैं ? ये लोग उसे कभी नहीं समझ पायेंगे! वह मशहूर होगा - चारों तरफ़ उसका नाम होगा - मुझे हैरानी नहीं होगी अगर भविष्य में आज का दिन हैरी पॉटर दिवस के रूप में मनाया जाये - हैरी के बारे में किताबें लिखी जायेंगी - हमारी दुनिया के हर बच्चे की ज़ुबान पर उसका नाम होगा।'

'बिलकुल ठीक कहा,' डम्बलडोर अपने आधे चाँद के आकार के चश्मे के ऊपर से गंभीरता से देखते हुये बोले। 'यह किसी भी बच्चे का दिमाग़ ख़राब करने के लिये काफी है। वह मशहूर हो जायेगा, इससे पहले कि वह बोलना और चलना सीखे! उसे तो वह घटना भी याद नहीं होगी, जिसके लिये वह मशहूर है! क्या आपको नहीं लगता कि अगर वह इस सबसे दूर रहकर बड़ा हो तो ज़्यादा अच्छा होगा - जब तक कि वह इसे झेलने के लिये तैयार न हो जाये?'

प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने अपना मुँह खोला, फिर अपना इरादा बदलकर अपने विचार को निगला और आगे कहा, 'हाँ - हाँ, आप ठीक कह रहे हैं। परंतु डम्बलडोर, वह बच्चा यहाँ आयेगा कैसे?' उन्होंने अचानक डम्बलडोर के चोगे को घूरा जैसे उन्हें लग रहा हो कि हैरी इसी के नीचे छुपा था।

'हैग्रिड उसे ला रहा है।'

'क्या आपको यह - *ठीक* - लगता है कि आप हैग्रिड पर इतने महत्वपूर्ण काम के लिये भरोसा कर रहे हैं?'

'मुझे हैग्रिड पर अपनी जान से ज़्यादा भरोसा है,' डम्बलडोर ने कहा।

'मैं यह नहीं कहती कि वह दिल का बुरा है,' प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने मन मारकर कहा, 'परंतु आपको यह तो मानना ही पड़ेगा कि वह थोड़ा लापरवाह है। उसकी यह आदत है - यह कैसी आवाज है ?'

एक हलकी गड़गड़ की आवाज़ ने उनके चारों तरफ़ फैली ख़ामोशी तोड़ी। आवाज़ धीरे-धीरे तेज़ होती गयी। उन्होंने सड़क पर ऊपर और नीचे की तरफ़ हेडलाइट की रोशनी की तलाश की। और जब आवाज़ बहुत तेज़ हो गयी, तो उन्होंने ऊपर आसमान की तरफ़ देखा - एक बड़ी मोटरसाइकल हवा में से निकलकर नीचे उतरी और उनके सामने सड़क पर आकर

खड़ी हो गयी।

मोटरसाइकल बहुत बड़ी थी, परंतु यह उस आदमी के मुकाबले में कुछ नहीं थी, जो उस पर बैठा हुआ था। वह आम आदमी की तुलना में दुगुना लंबा था और कम से कम पाँच गुना चौड़ा था। वह एकदम *जंगली* लग रहा था, क्योंकि काले बालों और दाढ़ी की लंबी लटों ने उसके ज़्यादातर चेहरे को छुपा रखा था। उसके हाथ कूड़ेदान के ढक्कन जितने बड़े थे और चमड़े के जूतों में उसके पैर बेबी डॉल्फिन की तरह लग रहे थे। उसकी विशाल, शक्तिशाली बाँहों में कंबलों की एक पोटली थी।

'हैग्रिड,' डम्बलडोर ने राहत की साँस लेते हुए कहा। 'आख़िर तुम आ ही गये। और तुम्हें यह मोटरसाइकल कहाँ से मिली?'

'उधार ली, प्रोफ़ेसर डम्बलडोर, सर,' हैग्रिड ने मोटरसाइकल से सावधानी से उतरते हुये कहा। 'सिरियस ब्लैक ने यह हमें उधार दी है। हम उसे ले आये, सर।'

'कोई मुश्किल तो नहीं हुई?'

'नहीं, सर - घर तो लगभग पूरी तरह तबाह हो गया था, परंतु इससे पहले कि मगलू चारों तरफ जमा हो जाते, हम उसे सही-सलामत बाहर निकाल लाये। जब हम ब्रिस्टल के ऊपर उड़ रहे थे तो उसकी नींद लग गयी।'

डम्बलडोर और प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल आगे झुके और उन्होंने कंबलों की पोटली के ऊपर से झाँका। अंदर एक छोटा बच्चा था, जो गहरी नींद में सो रहा था। उसके माथे पर काले घने बालों के गुच्छे के नीचे उन्हें एक अजीब से आकार का घाव दिख रहा था, जैसे वहाँ पर बिजली गिरी हो।

'क्या यहीं पर -?' प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने फुसफुसाते हुये पूछा।

'हाँ,' डम्बलडोर ने कहा। 'उसके माथे पर यह निशान ज़िंदगी भर रहेगा।'

'क्या आप इस बारे में कुछ नहीं कर सकते, डम्बलडोर?'

'अगर मैं कर भी सकता, तो भी नहीं करता। घाव के निशान कई बार बहुत काम आते हैं। मेरे ख़ुद के बाँये घुटने के ऊपर एक निशान है, जो लंदन के अंडरग्राउंड का बेहतरीन नक़्शा है। ख़ैर - उसे मुझे दे दो, हैग्रिड। अच्छा रहेगा अगर हम इस काम को जल्दी से निबटा लें।'

डम्बलडोर ने हैरी को अपनी बाँहों में लिया और डर्स्ली के घर की तरफ मुड़े।

'क्या हम - क्या हम उसे गुडबाई कह सकते हैं, सर?' हैग्रिड ने पूछा।

उसने अपना बड़ा, झबरीले बालों वाला सिर हैरी पर झुकाया और अपने लटकते बालों को छुआते हुये उसे बहुत हलके से चूम लिया। फिर अचानक हैग्रिड के मुँह से ऐसी आवाज निकली जैसे कोई घायल कुत्ता रो रहा हो।

'शश्श्श्श!' प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल दबी आवाज़ में बोलीं। 'मगलू जाग जायेंगे!'

'स-स-सॉरी,' हैग्रिड ने सिसकते हुये कहा। उसने एक बड़ा-सा धब्बेदार रूमाल निकाला और उसमें अपना चेहरा छुपा लिया। 'परंतु हम इसे सहन नहीं कर स-स-सकते - लिली और जेम्स मर गये - और बेचारे छोटे से हैरी को मगलुओं के साथ रहना पड़ेगा -'

'हाँ, हाँ, बड़े दुख की बात है, पर अपने आपको सँभालो हैग्रिड, वरना लोग हमें देख लेंगे,' प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने फुसफुसाते हुये कहा। जब डम्बलडोर बगीचे की नीची दीवार को लाँघकर सामने वाले दरवाज़े तक गये, तो प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल हैग्रिड की बाँह को डरते-डरते थपथपा रही थीं। डम्बलडोर ने हैरी को दरवाज़े की सीढ़ियों पर धीरे से लिटा दिया,

अपने चोगे से एक चिट्ठी निकाली, उसे हैरी के कंबलों के अंदर सावधानी से रखा और इसके बाद वे उन दोनों के पास लौट आये। पूरे एक मिनट तक वे तीनों खड़े रहे और उस छोटी सी पोटली को निहारते रहे। हैग्रिड के कंधे हिल रहे थे, प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल की पलकें लगातार झपक रही थीं और डम्बलडोर की आँखों में जो चमक आम तौर पर नज़र आती थी वह इस समय नहीं दिख रही थी।

'तो,' डम्बलडोर ने अंत में कहा, 'अब हमारा काम ख़त्म हो चुका है। अब यहाँ रुकने की कोई ज़रूरत नहीं है। अच्छा होगा कि हम यहाँ से चल दें और जश्न में शामिल हो जायें।'

'हाँ,' हैग्रिड ने बहुत दबी आवाज़ में कहा। 'हम यह मोटरसाइकल सिरियस ब्लैक को लौटा देते हैं। गुडनाइट, प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल - प्रोफ़ेसर डम्बलडोर, सर।'

अपने बहते हुये आँसुओं को अपनी जैकेट की आस्तीन से पोंछते हुये हैग्रिड मोटरसाइकल पर सवार हुआ और किक मारकर उसके इंजन में जान डाल दी। फिर तेज़ गरज के साथ मोटरसाइकल हवा में उठी और रात के अँधेरे में गुम हो गयी।

'प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल, मुझे आशा है आपसे जल्दी ही मुलाकात होगी,' डम्बलडोर ने सिर हिलाते हुये कहा। प्रोफ़ेसर मैक्गॉनेगल ने जवाब में अपनी नाक सुड़की।

डम्बलडोर मुड़े और सड़क पर चल दिये। मोड़ पर जाकर वे रुके और अपना चाँदी का बत्ती बुझाने वाला यंत्र बाहर निकाला। उन्होंने उसे एक बार क्लिक किया, तो रोशनी के बारह गोले सड़क के लैंपों की तरफ तेज़ी से लपके और प्रिविट ड्राइव अचानक नारंगी रोशनी में नहा गया। डम्बलडोर देख सकते थे कि सड़क के दूसरे सिरे पर एक भूरी बिल्ली चली जा रही थी। उन्हें नंबर चार की सीढ़ी पर रखे कंबलों की पोटली की झलक भर दिख रही थी।

'गुड लक, हैरी,' उन्होंने धीमे से कहा। फिर वे पलटे और चोगे को एक झटका देते हुये ग़ायब हो गये।

हलकी-हलकी हवा प्रिविट ड्राइव की साफ़-सुथरी झाड़ियों को हिला रही थी। काले आसमान के नीचे सब कुछ शांत और व्यवस्थित था। यह वह आख़िरी जगह थी जहाँ आप आश्चर्यजनक घटनायें होने की उम्मीद कर सकते थे। हैरी पॉटर ने सोते-सोते अपने कंबलों के भीतर करवट बदली। उसके नन्हे से हाथ ने पास रखी चिट्ठी को पकड़ लिया और वह सोता रहा। वह नहीं जानता था कि वह ख़ास था, यह भी नहीं कि वह मशहूर था, यह भी नहीं कि वह कुछ घंटे बाद मिसेज़ डर्स्ली की चीख़ सुनकर उठेगा जब वे दूध की बोतल बाहर रखने के लिये सामने वाला दरवाज़ा खोलेंगी। वह यह भी नहीं जानता था कि अगले कुछ सप्ताह उसका कज़िन डडली उसे नोंचेगा और तंग करेगा ... और वह यह तो जान ही नहीं सकता था कि इस समय पूरे देश में छुप-छुपकर मिल रहे लोग अपने गिलास उठाकर दबी आवाज़ में कह रहे थे : 'हैरी पॉटर के नाम - वह लड़का जो जिंदा बच गया!'

अध्याय - दो
गायब होने वाला काँच

जब डर्स्ली पति-पत्नी को उनका भांजा बाहर सीढ़ियों पर मिला था, उस घटना को लगभग दस साल हो चुके थे, पर प्रिविट ड्राइव में शायद ही कुछ बदला था। सूरज अब भी सामने वाले साफ़-सुथरे बगीचे की तरफ़ से निकलता था और डर्स्ली परिवार के दरवाज़े पर लगी पीतल की नेमप्लेट पर लिखे चार नंबर को चमकाता था। इसके बाद यह उनके ड्राइंग रूम घुसता था, जो लगभग वैसा ही था जैसा उस रात था जब मिस्टर डर्स्ली ने उल्लुओं के बारे में अनोखी ख़बर सुनी थी। केवल मैंटलपीस पर रखे फोटो ही सचमुच बता रहे थे कि कितना वक़्त गुज़र चुका था। दस साल पहले वहाँ पर बड़ी गेंद जैसे एक मोटे गुलाबी बच्चे के बहुत से फोटो थे, जिसने रंग-बिरंगी टोपियाँ पहन रखी थीं - परंतु डडली डर्स्ली अब छोटा बच्चा नहीं था। अब फोटो बता रहे थे कि सुनहरे बालों वाला एक मोटा-तगड़ा लड़का अपनी पहली साइकल पर सवार है, मेले में झूला झूल रहा है, अपने पिता के साथ कम्प्यूटर गेम खेल रहा है, उसकी माँ उसे गले लगा रही है और चूम रही है। कमरे में ऐसी कोई निशानी नहीं थी, जिससे यह पता चले कि उस घर में एक और बच्चा भी रहता था।

परंतु हैरी पॉटर अब भी वहीं था और इस समय सोया हुआ था, हालाँकि वह ज़्यादा देर तक नहीं सो पाया। उसकी पेटूनिया आंटी जाग गयी थीं और उनकी तेज़ आवाज़ उस दिन उस घर में गूँजने वाली पहली आवाज़ थी।

'उठ! जल्दी उठ! सुना कि नहीं?'

हैरी चौंक कर जागा। उसकी आंटी ने एक बार फिर दरवाज़ा भड़भड़ाया।

'उठो!' वे चीख़ीं। हैरी को उनके कदमों की आवाज़ से समझ में आ गया कि वे किचन की तरफ़ जा रही थीं और फिर उसे गैस पर फ्राइंग पैन रखने की आवाज़ सुनाई दी। हैरी करवट बदलकर पीठ के बल लेटा और उसने वह सपना याद करने की कोशिश की, जो वह उठने से पहले देख रहा था। बड़ा प्यारा सपना था। उसमें मोटरसाइकल उड़ रही थी। उसे यह अजीब सा एहसास हो रहा था जैसे वह यह सपना पहले भी देख चुका था।

उसकी आंटी दुबारा उसके दरवाज़े के बाहर धमक चुकी थीं।

'अभी तक नहीं उठे?' उन्होंने चिल्लाकर पूछा।

'उठ तो गया,' हैरी ने जवाब दिया।

'तो फिर जल्दी बाहर आओ। मैं चाहती हूँ कि तुम नाश्ते पर नजर रखो और ध्यान रखना, जला मत देना। मैं डडली के बर्थडे पर हर चीज़ बढ़िया चाहती हूँ।'

हैरी के मुँह से आह निकल गयी।

'क्या कहा तुमने?' आंटी दरवाज़े के बाहर से गुर्रायीं।

'कुछ नहीं, कुछ नहीं ...'

डडली का बर्थडे - वह कैसे भूल गया था ? हैरी धीरे से बिस्तर से बाहर निकला और अपने मोज़े ढूँढने लगा, जो उसे अपने बिस्तर के नीचे मिले। एक मोज़े में मकड़ी थी, जिसे निकालने के बाद उसने मोज़े पहन लिये। हैरी को मकड़ियों के साथ रहने की आदत थी, क्योंकि सीढ़ियों के नीचे की अलमारी में ढेर सारी मकड़ियाँ थीं और वह यहीं सोता था।

जब उसने कपड़े पहन लिये, तो वह हॉल से होता हुआ किचन में गया। डडली के बर्थडे के ढेर सारे तोहफ़ों के नीचे टेबल लगभग पूरी तरह से छुप गयी थी। ऐसा लग रहा था जैसे डडली को वह नया कम्प्यूटर मिल गया था, जो उसे

चाहिये था। इसके साथ ही उसे एक और टेलीविज़न मिल गया था तथा रेसिंग बाइक भी। डडली रेसिंग बाइक क्यों चाहता था - यह हैरी के लिये एक रहस्य था, क्योंकि डडली बहुत मोटा था और एक्सरसाइज़ से नफरत करता था - जब तक कि इसमें किसी को मुक्का मारना शामिल न हो। डडली का प्रिय पंचिंग बैग हैरी था, हालाँकि वह उसकी पकड़ में बहुत कम आ पाता था। हैरी दिखता नहीं था, परंतु था वह बहुत तेज़।

शायद यह अँधेरी अलमारी में रहने का परिणाम था कि हैरी अपनी उम्र के हिसाब से दुबला और छोटा रह गया था, पर वह सचमुच जितना था, उससे भी ज़्यादा दुबला और छोटा दिखता था, क्योंकि उसे हर समय डडली के पुराने कपड़े पहनना पड़ते थे और डडली उससे चार गुना मोटा था। हैरी का चेहरा दुबला था, घुटने गाँठदार, बाल काले और आँखें चमकदार हरी थीं। वह गोल चश्मा पहनता था, जिस पर बहुत सा सेलोटेप लगा रहता था, क्योंकि डडली उसकी नाक पर अक्सर मुक्के मारता रहता था। हैरी को अपनी शक्ल-सूरत में सिर्फ एक ही चीज़ पसंद थी : उसके माथे पर बना बहुत पतला निशान, जो ऐसा दिखता था जैसे वहाँ पर बिजली गिरी हो। जब से उसने होश सँभाला था तभी से वह इस निशान को देख रहा था और उसे याद था कि होश सँभालने के बाद उसने पेटूनिया आंटी से पहला सवाल यही पूछा था कि उसके माथे पर यह निशान कैसे बना।

'उस कार एक्सीडेंट में जिसमें तुम्हारे माता-पिता मरे थे,' उन्होंने कहा था। 'और हाँ, सवाल मत पूछो।'

सवाल मत पूछो - यह डर्स्ली परिवार में शांतिपूर्ण जीवन का पहला नियम था।

जब हैरी नाश्ते को पलट रहा था, तो वरनॉन अंकल किचन में आये।

'बालों में कंघी करो!' वे भौंके, जैसे उन्होंने हैरी से गुड मॉर्निंग की हो।

सप्ताह में लगभग एक बार वरनॉन अंकल अपने अख़बार के ऊपर से देखते थे और चिल्लाते थे कि हैरी के बाल बहुत बढ़ गये हैं और उसे कटिंग की ज़रूरत है। उसकी क्लास में बाकी बच्चों की जितनी बार कटिंग होती थी, उन सबको आपस में जोड़ भी दिया जाये तो भी हैरी की कटिंग उनसे ज़्यादा बार होती थी, हालाँकि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि उसके बाल बहुत तेज़ी से बढ़ते थे।

जब डडली अपनी माँ के साथ किचन में आया, तो हैरी अंडे तल रहा था। डडली काफी कुछ वरनॉन अंकल जैसा दिखता था : बड़ा गुलाबी चेहरा; छोटी गर्दन; छोटी पानीदार नीली आँखें; और मोटे, सुनहरे बाल, जो उसके मोटे सिर पर जमे हुये थे। पेटूनिया आंटी अक्सर कहती थीं कि डडली किसी नन्हे देवदूत की तरह दिखता है - हैरी अक्सर कहता था कि डडली किसी सुअर की तरह दिखता है, जिसने विग पहन रखी हो।

हैरी ने अंडे और नाश्ते की प्लेटें टेबल पर रख दीं, जो आसान काम नहीं था, क्योंकि वहाँ पर जगह बहुत कम थी। इस बीच डडली अपने तोहफे गिन रहा था। उसका चेहरा उतर गया।

'छत्तीस,' उसने अपने मम्मी-डैडी की तरफ देखते हुये कहा। 'ये तो पिछले साल से दो कम हैं।'

'राजा बेटे, तुमने मार्ज आंटी के तोहफे को तो गिना ही नहीं, देखो वह मम्मी-डैडी के बड़े तोहफे के नीचे छुपा है।'

'ठीक है, तो सैंतीस हुये,' डडली ने कहा और उसका चेहरा लाल हो रहा था। हैरी को लगा कि डडली का नाटक अब शुरू होने ही वाला है और इसलिये वह नाश्ते को अपने मुँह में जितनी तेज़ी से भर सकता था भरने लगा, क्योंकि डडली टेबल भी पलटा सकता था।

ज़ाहिर था पेटूनिया आंटी को भी ख़तरा दिख गया था, क्योंकि वे जल्दी से बोलीं, 'और हम आज जब बाजार जायेंगे तो तुम्हारे लिये *दो* और तोहफे ले आयेंगे। यह कैसा रहेगा, बेटू ? *दो* और तोहफे। अब तो ठीक है ?'

डडली ने एक पल सोचा। यह मुश्किल काम था। अंत में वह धीमे से बोला, 'तो मेरे पास सैंतीस और दो... सैंतीस

और दो ...'

'उनतालीस, मेरे लाड़ले,' पेटूनिया आंटी बोलीं।

'ओह,' डडली धम्म से बैठ गया और उसने अपने सबसे पास वाले पैकेट पर झपट्टा मारा। 'फिर ठीक है।'

वरनॉन अंकल धीरे से हँसे।

'छोटा बदमाश अपने पैसे की पूरी कीमत वसूल करना चाहता है, बिलकुल अपने डैडी की तरह। वाह मेरे बेटे, वाह डडली!' उन्होंने डडली के बालों पर हाथ फेरा।

उसी समय फोन की घंटी बजी और पेटूनिया आंटी फोन सुनने चली गयीं, जबकि हैरी और वरनॉन अंकल इस बीच डडली को तोहफे खोलते हुये देखते रहे, जिनमें रेसिंग बाइक, वीडियो कैमरा, रिमोट कंट्रोल वाला हवाई जहाज़, सोलह नये कम्प्यूटर गेम और वी. सी. आर. शामिल था। जब वह एक सुनहरी कलाईघड़ी की पन्नी खोल रहा था तभी पेटूनिया आंटी फोन सुनकर वापस आयीं; उनके चेहरे पर गुस्सा भी था और चिंता भी।

'बुरी ख़बर है, वरनॉन,' वे बोलीं। 'मिसेज़ फिग का पैर टूट गया है। वे इसे अपने पास नहीं रख सकतीं।' उन्होंने हैरी की तरफ सिर झटकते हुये कहा।

दहशत के मारे डडली का मुँह खुला रह गया, परंतु हैरी का दिल तो बल्लियों उछलने लगा। हर साल डडली के जन्मदिन पर अंकल-आंटी डडली और उसके किसी दोस्त को दिन भर बाहर घुमाने ले जाते थे, यानी एडवेंचर पार्क, हैमबर्गर बार या फिल्म। हर साल हैरी को मिसेज़ फिग नाम की एक पागल बुढ़िया के पास छोड़ दिया जाता था, जो दो गली दूर रहती थी। हैरी वहाँ जाने से बुरी तरह चिढ़ता था। वहाँ पूरे घर में पत्तागोभी की बदबू भरी रहती थी और मिसेज़ फिग उसे जबर्दस्ती उन सब बिल्लियों के फोटो दिखाती थीं, जो उन्होंने कभी पाली थीं।

'अब क्या होगा?' पेटूनिया आंटी ने कहा। वे हैरी को खा जाने वाली नज़रों से देख रही थीं, जैसे उसी ने इसकी योजना बनायी हो। हैरी जानता था कि उसे इस बात पर दुखी होना चाहिये कि मिसेज़ फिग की टाँग टूट गयी। परंतु यह आसान नहीं था, क्योंकि वह यह भी जानता था कि अब उसे एक साल तक टिबल्स, स्नोई, मिस्टर पॉज़ और टफ़्टी को नहीं देखना पड़ेगा।

'हम मार्ज को फोन कर सकते हैं,' वरनॉन अंकल ने सुझाव दिया।

'बेवकूफी की बातें मत करो वरनॉन, वो हैरी से नफरत करती हैं।'

डर्स्ली पति-पत्नी अक्सर हैरी के बारे में इसी तरह से बातें करते थे, जैसे वह वहाँ हो ही नहीं - या फिर वह कोई बहुत ही कम बुद्धि वाला प्राणी हो, जो उनकी बातें नहीं समझ सकता हो, जैसे कोई घोंघा।

'और उसका-क्या-नाम-है, तुम्हारी सहेली - वॉन?'

'माजोर्का में छुट्टियाँ मनाने गयी है,' पेटूनिया आंटी खीझते हुये बोलीं।

'आप मुझे घर पर ही छोड़ जायें, हैरी ने बड़ी आशा से कहा (कम से कम आज के दिन तो वह टेलीविज़न पर जो चाहेगा देखेगा और शायद डडली के कम्प्यूटर पर गेम भी खेल लेगा)।

पेटूनिया आंटी को देखकर लग रहा था जैसे उन्होंने अभी-अभी साबुत नींबू निगल लिया हो।

'और वापस लौटकर देखें कि घर तबाह हो चुका है?' वे गुर्रायीं।

'मैं घर को बम से तो नहीं उड़ा दूँगा,' हैरी ने कहा, परंतु किसी ने उसकी बात नहीं सुनी।

'एक काम करते हैं, इसे चिड़ियाघर ले चलते हैं,' पेटूनिया आंटी ने धीमे से कहा, '... और वहाँ इसे कार में

छोड़ देंगे ...'

'कार नयी है, हम इसे कार में अकेला नहीं छोड़ सकते ...'

डडली गला फाड़कर रोने लगा। सच तो यह था कि वह रो नहीं रहा था। उसे सचमुच रोये तो बरसों हो चुके थे, परंतु वह जानता था कि अगर वह मुँह बनायेगा और ज़ोर से रोने जैसी आवाज़ निकालेगा तो उसकी माँ उसकी हर इच्छा पूरी कर देंगी।

'मेरे प्यारे, राजदुलारे, रोना नहीं। मम्मी उसे तुम्हारा बर्थडे बर्बाद नहीं करने देंगी!' वे चीख़ीं और उसे बाँहों में भर लिया।

'मैं ... नहीं ... चाहता ... कि ... वह ... साथ ... चले!' डडली झूठ-मूठ की ज़ोरदार सुबकियों के बीच चीख़ा। 'वह हमेशा हर चीज़ गड़बड़ कर देता है!' उसने अपनी माँ की बाँहों के बीच से झाँकते हुये हैरी को चिढ़ाया।

तभी दरवाज़े की घंटी बजी - 'हे भगवान, वे लोग आ गये!' पेटूनिया आंटी हड़बड़ाकर बोलीं - और एक पल बाद, डडली का सबसे अच्छा दोस्त पियर्स पॉलकिस अपनी माँ के साथ अंदर आ गया। पियर्स एक दुबला-पतला लड़का था, जिसका चेहरा चूहे जैसा था। जब डडली दूसरे बच्चों को मारता था, तो आम तौर पर पियर्स ही उनके हाथ पीछे पकड़कर रखता था। डडली ने रोने का नाटक तत्काल बंद कर दिया।

आधे घंटे बाद हैरी को अपनी किस्मत पर भरोसा नहीं हो रहा था; वह डर्स्ली की कार में पियर्स और डडली के साथ पीछे वाली सीट पर बैठा हुआ था और ज़िंदगी में पहली बार चिड़ियाघर जा रहा था। उसकी आंटी और अंकल को यह समझ में नहीं आया कि उसका क्या किया जाये, परंतु चलने से पहले वरनॉन अंकल हैरी को एक तरफ ले गये।

'मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ,' अपने बड़े जामुनी चेहरे को हैरी के बिलकुल पास लाकर उन्होंने कहा था, 'कान खोलकर सुन लो, लड़के - कोई भी खुराफात की, कोई भी - तो मैं तुम्हें उस अलमारी में क्रिसमस तक बंद कर दूँगा।'

'मैं कुछ नहीं करूँगा,' हैरी ने कहा, 'कसम से ...'

परंतु वरनॉन अंकल ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया। कोई भी कभी नहीं करता था।

समस्या यह थी कि हैरी के साथ अक्सर अजीब चीज़ें होती थीं और डर्स्ली परिवार को यह बताने से कोई फायदा नहीं होता था कि उसने यह चीज़ें नहीं कीं।

एक बार, पेटूनिया आंटी यह देखते-देखते तंग आ गयीं कि हैरी जब कटिंग कराकर लौटता था, तो ऐसा लगता था जैसे नाई ने उसके बालों को छुआ ही न हो। गुस्से में उन्होंने किचन से कैंची उठायी और हैरी के बाल इतने छोटे काट दिये कि वह लगभग गंजा हो गया। उन्होंने सिर्फ सामने की लट छोड़ दी थी, ताकि 'उसका भयानक निशान छुप जाये'। डडली तो हैरी को देखकर हँसते-हँसते लोटपोट हो गया। उस रात हैरी को यह सोच-सोचकर नींद नहीं आयी कि अगले दिन स्कूल में उसका क्या हाल होगा। वहाँ पर वैसे भी बच्चे उसके ढीले-ढाले कपड़े और सेलोटेप लगे चश्मे को देखकर उसकी हँसी उड़ाते थे। बहरहाल अगली सुबह जब वह उठा, तो उसने देखा कि उसके बाल उतने ही बड़े हो गये थे, जितने पेटूनिया आंटी के काटने से पहले थे। इस बात के लिये उसे एक सप्ताह तक अलमारी में बंद रहने की सज़ा दी गयी, हालाँकि उसने यह समझाने की लाख कोशिश की कि *उसे क्या मालूम,* उसके बाल इतनी जल्दी कैसे बढ़ गये।

एक बार पेटूनिया आंटी उसे डडली का पुराना और बुरा सा दिखने वाला स्वेटर पहनाने की कोशिश कर रही थीं (जो भूरा था और उस पर नारंगी फुदने थे)। उन्होंने उसके सिर में स्वेटर घुसाने की जितनी कोशिश की, वह उतना ही छोटा होता चला गया और अंत में इतना छोटा हो गया कि वह किसी दस्ताने की तरह हाथ में तो घुस सकता था, परंतु हैरी के सिर में नहीं। पेटूनिया आंटी ने सोचा स्वेटर धुलाई में सिकुड़ गया होगा और हैरी को बड़ी राहत मिली कि उसे सज़ा नहीं मिली।

परंतु एक बार वह बहुत परेशानी में पड़ गया, जब वह स्कूल के किचन की छत पर पहुँच गया था। डडली का गैंग हर दिन की तरह उस दिन भी उसका पीछा कर रहा था, और बाकी लोगों के साथ-साथ ख़ुद हैरी भी यह देखकर हैरान रह गया कि वह चिमनी पर बैठा हुआ था। हैरी की प्रिंसिपल ने बहुत गुस्से में डर्स्ली परिवार को पत्र में लिखा कि हैरी स्कूल की इमारतों पर चढ़ रहा था। पर उसने तो सिर्फ़ कोशिश की थी (और उसने अपनी अलमारी के बंद दरवाजे के पीछे से वरनॉन अंकल को चिल्लाकर यह बात बतायी थी) कि वह किचन के बाहर रखे बड़े कूड़ेदानों के पीछे छलाँग लगा दे। हैरी सोच रहा था कि शायद तेज़ हवा के झोंके ने उसकी छलाँग के बीच में उसे ऊपर उठा दिया होगा।

परंतु आज कोई भी गड़बड़ नहीं होगी। डडली और पियर्स के साथ दिन गुज़ारना भी बहुत बड़ी बात थी, जब वह जगह स्कूल, उसकी अलमारी या पत्तागोभी की बदबू से भरा मिसेज़ फिग का ड्रॉइंग रूम न हो।

गाड़ी चलाते समय वरनॉन अंकल पेटूनिया आंटी के सामने सबको कोस रहे थे। कोसना उनका प्रिय शौक था : ऑफ़िस के लोग, हैरी, म्युनिसिपैलिटी, हैरी, बैंक और हैरी उनके कुछ प्रिय विषय थे। आज सुबह यह विषय था मोटरसाइकल।

जब एक मोटरसाइकल उनकी गाड़ी के आगे निकल गयी तो वे बोले, '...जवान आवारा लोग ... पागलों की तरह अंधाधुंध गाड़ी भगाते हैं।'

'मैंने सपने में एक मोटरसाइकल देखी थी,' हैरी को अचानक याद आया और उसने कहा, 'वह उड़ रही थी।'

वरनॉन अंकल ने आगे वाली कार में लगभग टक्कर मार दी। वे अपनी सीट में पीछे मुड़े और हैरी की तरफ़ देखकर चिल्लाये और इस समय उनका चेहरा मूँछ वाले किसी बड़े चुकंदर की तरह दिख रहा था, **'मोटरसाइकलें उड़ नहीं सकतीं।'**

डडली और पियर्स ही-ही करने लगे।

'मैं जानता हूँ मोटरसाइकलें उड़ नहीं सकतीं,' हैरी ने कहा। 'यह तो बस एक सपना था।'

परंतु वह सोच रहा था, काश उसने यह नहीं कहा होता। अगर डर्स्ली परिवार सवाल पूछने से भी ज़्यादा किसी बात से चिढ़ता था तो ऐसा तब होता था जब हैरी बोलता था कि कोई चीज़ उस तरह से हो रही थी जिस तरह से उसे नहीं होना चाहिये, चाहे वह सपने में या कार्टून में ही क्यों न हो - उन्हें लगता था इससे उसके दिमाग़ में ख़तरनाक विचार आ जायेंगे।

आज बहुत सुहावना शनिवार होने की वजह से चिड़ियाघर में बहुत से परिवारों की भीड़ थी। डर्स्ली ने गेट के बाहर डडली और पियर्स को बड़ी चॉकलेट आइस्क्रीम दिलवायी। और फिर वे हैरी को जल्दी से वहाँ से हटा पाते, इससे पहले ही वैन में मुस्कराती हुई महिला ने चूँकि हैरी से पूछ लिया कि उसे क्या चाहिये, इसलिये उन्हें मन मारकर उसे एक सस्ती से लेमन आइस्क्रीम दिलवानी पड़ी, जिसे चूसते हुये हैरी ने सोचा, यह भी बुरी नहीं थी। तभी उसने देखा कि एक गोरिल्ला अपना सिर खुजा रहा था और डडली से काफी मिलता-जुलता दिख रहा था, सिवाय इसके कि गोरिल्ले के बाल सुनहरे नहीं थे।

बहुत लंबे समय बाद हैरी की सुबह इतनी अच्छी गुज़री थी। वह इस बात का ध्यान रख रहा था कि डर्स्ली परिवार से थोड़ी दूर चले, ताकि डडली और पियर्स, जो लंचटाइम तक जानवरों को देख-देखकर बोर होने लगे थे, कहीं उसे मारने का अपना प्रिय खेल शुरू न कर दें। उन्होंने चिड़ियाघर के रेस्तराँ में लंच किया और इसके बाद डडली एक बार फिर हंगामा खड़ा करने लगा, क्योंकि उसकी फ्रूट आइस्क्रीम ख़त्म हो गयी थी। इस पर वरनॉन अंकल ने उसे एक और आइस्क्रीम दिलवा दी और हैरी को पहली वाली ख़त्म करने की इजाज़त दी।

हैरी ने बाद में यह सोचा, उसे पता होना चाहिये था कि इतना अच्छा समय ज़्यादा देर तक नहीं चल सकता था।

लंच के बाद वे लोग चिड़ियाघर के नागभवन में गये। यहाँ ठंडक और अँधेरा था, और दीवारों पर लगी खिड़कियों पर रोशनी थी। काँच के पीछे कई तरह की छिपकलियाँ और साँप थे, जो लकड़ी और पत्थर के टुकड़ों पर फिसल और

चढ़ रहे थे। डडली और पियर्स बड़े ज़हरीले कोबरा और आदमी को चकनाचूर करने वाले मोटे अजगर को देखना चाहते थे। डडली ने वहाँ के सबसे बड़े साँप को जल्दी ही ढूँढ लिया। वह वरनॉन अंकल की कार के चारों तरफ अपने शरीर को दो बार लपेटकर कार को किसी कचरापेटी में चकनाचूर कर सकता था - परंतु इस वक़्त वह ऐसा करने के मूड में नहीं दिख रहा था। सच तो यह था कि वह गहरी नींद में सो रहा था।

डडली काँच पर अपनी नाक गड़ाकर खड़ा रहा और साँप की चमकदार भूरी कुंडलियों को देखता रहा।

'इसे उठाओ,' उसने अपने पिता से झल्लाते हुये कहा। वरनॉन अंकल ने काँच पर ठक-ठक की, परंतु साँप हिला तक नहीं।

'एक बार और करो,' डडली ने आर्डर जमाया। वरनॉन अंकल ने अपनी उँगलियों के पिछले हिस्से से काँच को बढ़िया तरीके से ठोंका, परंतु साँप फिर भी सोता रहा।

'कितना बोरिंग है,' डडली ने आह भरी और पैर पटकते हुये दूर चला गया।

हैरी काँच के सामने आया और उसने साँप की तरफ उत्सुकता से देखा। कोई ताज्जुब नहीं कि बेचारा साँप बोरियत के मारे ही मर जाये - साथ में कोई नहीं, सिवाय उन मूर्ख लोगों के जो दिन भर उसे तंग करने की कोशिश करते थे और काँच पर अपनी उँगलियाँ ठोंकते रहते थे। यह तो अलमारी को बेडरूम बनाने से भी बुरा था, जहाँ इकलौती मेहमान पेटूनिया आंटी होती थीं, जो उसे जगाने के लिये दरवाज़ा भड़भड़ाती थीं - कम से कम उसे पूरे घर में घूमने को तो मिल जाता था।

साँप ने अचानक अपनी छोटी चमकदार आँखें खोलीं। साँप ने धीरे, बहुत धीरे अपना सिर उठाया जब तक कि उसकी आँखें हैरी की आँखों की ऊँचाई तक नहीं आ गयीं।

उसने आँख मारी ।

हैरी घूरने लगा। फिर उसने जल्दी से आसपास देखा कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा था। कोई नहीं देख रहा था। उसने साँप की तरफ पलटकर देखा और उसने भी आँख मार दी।

साँप ने वरनॉन अंकल और डडली की तरफ सिर को झटका दिया और अपनी आँखें छत की तरफ उठायीं। उसने हैरी को इस तरह देखा मानो कह रहा हो : '*मेरे साथ पूरे समय यही होता है* ।'

'मैं जानता हूँ,' हैरी काँच के इस पास से बुदबुदाया, हालाँकि उसे विश्वास नहीं था कि साँप उसकी आवाज़ को सुन सकता था। 'इससे सचमुच बहुत चिढ़ छूटती होगी।'

साँप ने तेज़ी से अपना सिर हिलाया।

'वैसे तुम कहाँ से आये हो?' हैरी ने पूछा।

साँप ने अपनी पूँछ काँच के पास लगे एक छोटे साइनबोर्ड पर मारी। हैरी ने इसे पढ़ा।

बोआ कन्स्ट्रिक्टर, ब्राज़ील ।

'क्या वहाँ पर अच्छा लगता था?'

साँप ने एक बार फिर उसी साइनबोर्ड पर अपनी पूँछ मारी और हैरी ने पढ़ा : *यह साँप चिड़ियाघर में पैदा हुआ था* । 'अच्छा, मैं समझ गया - तुम कभी ब्राज़ील में रहे ही नहीं?'

जैसे ही साँप ने अपना सिर हिलाया, हैरी के पीछे से एक कानफोडू आवाज़ आयी, जिसे सुनकर वे दोनों उछल पड़े। **'डडली! मिस्टर डर्स्ली! आइये और इस साँप को देखिये! आपको विश्वास नहीं होगा यह क्या कर रहा है!'**

डडली जितनी तेज़ी से आ सकता था, उनकी तरफ लुढ़कता हुआ आया।

'तुम अलग हटो,' उसने हैरी की पसलियों में घूँसा मारते हुये कहा। अचानक हमले से हैरान हैरी कंक्रीट के फर्श पर धड़ाम से गिर गया। आगे जो हुआ वह इतनी तेज़ी से हुआ कि कोई भी नहीं देख पाया यह कैसे हुआ - एक पल पहले तक पियर्स और डडली काँच के करीब उससे टिके खड़े थे और दूसरे ही पल वे दहशत में चीख़ते हुये पीछे की तरफ उछल पड़े।

हैरी बैठ गया और हाँफने लगा; साँप के सामने वाला काँच ग़ायब हो गया था। साँप अब तेज़ी से अपनी कुंडली खोल रहा था और फर्श पर फिसल रहा था - पूरे नागभवन में लोग चीख़ने लगे और बाहर के दरवाज़ों की तरफ भागने लगे।

जब साँप उसके पास से तेज़ी से सरसराता हुआ गया, तो हैरी कसम खा सकता था कि उसने धीमे से फुफकारते हुये कहा था, 'ब्राज़ील, मैं आ रहा हूँ, ... शुक्रिया, दोस्त?'

नागभवन का पहरेदार सदमे में था।

'परंतु काँच,' वह बार-बार कह रहा था, 'काँच कहाँ गया?'

चिड़ियाघर के डायरेक्टर ने अपने हाथ से पेटूनिया आंटी को एक कप कड़क मीठी चाय बनाकर दी और वह लगातार उनसे माफी माँगता रहा। पियर्स और डडली अनापशनाप बक रहे थे। जहाँ तक हैरी ने देखा था, साँप ने कुछ भी नहीं किया था। उसने तो उनके पास से गुज़रते समय सिर्फ उनके पैरों के पास अपनी पूँछ मज़ाक में पटकी थी, परंतु जब वे वरनॉन अंकल की कार में वापस लौटे, तो डडली उन्हें बता रहा था कि किस तरह साँप ने उसके पैर में लगभग काट ही लिया था और पियर्स कसम खा रहा था कि साँप ने उसे दबोचकर मारने की कोशिश की थी। परंतु कम से कम हैरी के लिये सबसे बुरी बात वह थी जो पियर्स ने कही। जब पियर्स इतना शांत हो गया कि कुछ कह सके, तो उसने सबके सामने कहा था, 'हैरी साँप से बात कर रहा था, है ना हैरी?'

वरनॉन अंकल ने तब तक इंतज़ार किया जब तक पियर्स उनके घर से चला नहीं गया और उसके बाद वे हैरी पर जमकर बरसे। वे इतने गुस्से में थे कि उनके मुँह से शब्द मुश्किल से निकल रहे थे। वे सिर्फ इतना कह पाये, 'जाओ - अलमारी - वहीं रहो - कोई खाना नहीं।' इतना कहने के बाद वे कुर्सी पर गिर पड़े और पेटूनिया आंटी को भागकर उनके लिये ब्रांडी का एक बड़ा पेग लाना पड़ा।

*

हैरी काफी देर तक अपनी अँधेरी अलमारी में पड़ा रहा। वह सोच रहा था काश उसके पास घड़ी होती। वह नहीं जानता था कि कितने बज गये थे और इसलिये वह यकीन से नहीं कह सकता था कि डर्स्ली परिवार अभी सो गया होगा या नहीं। जब तक वे सो नहीं जाते, तब तक किचन में जाकर चोरी से कुछ खाने का ख़तरा नहीं उठा सकता था।

डर्स्ली परिवार के साथ रहते हुये लगभग दस साल हो गये थे, जहाँ तक उसे याद था, दस दुख भरे साल। वह तब से यहीं रह रहा था जब वह छोटा सा बच्चा था और उसके माता-पिता उस कार एक्सीडेंट में मर गये थे। उसे याद नहीं था कि उसके माता-पिता की मौत के समय वह भी कार में था। कई बार, जब वह अलमारी में लंबे घंटों के दौरान अपनी याददाश्त पर ज़ोर डालता था, तो उसे एक अजीब सा दृश्य दिखता था : चकाचौंध करने वाली हरी रोशनी और माथे में बहुत तेज़ दर्द। उसने मान लिया था कि यही एक्सीडेंट होगा, हालाँकि उसे यह समझ में नहीं आ रहा था कि इतनी सारी हरी रोशनी कहाँ से आ रही थी। उसे अपने माँ-बाप की शक्ल तक याद नहीं थी। उसके अंकल-आंटी उनके बारे में कभी बात नहीं करते थे, और सवाल पूछने के बारे में उसे पहले ही मना कर दिया गया था। घर में उनकी एक भी फोटो नहीं थी।

जब हैरी छोटा था, तो अक्सर सपने देखता था कि कोई अनजान रिश्तेदार उसे यहाँ से दूर ले जाने के लिये आया

है, परंतु ऐसा कभी नहीं हुआ। डर्स्ली परिवार के सिवाय उसका कोई नहीं था, परंतु कई बार उसे ऐसा लगता था (या शायद यह उसके मन का वहम हो) जैसे सड़क पर जा रहे अजनबी लोग उसे पहचानते थे। वे बड़े अजीब किस्म के अजनबी थे। एक बार जब वह पेटूनिया आंटी और डडली के साथ शॉपिंग करने गया, तो बैंगनी हैट पहने एक नाटे आदमी ने उसकी तरफ देखकर सिर झुकाया था। पेटूनिया आंटी ने गुस्सा होकर हैरी से पूछा कि क्या वह उस आदमी को जानता था और इसके बाद वे बिना कुछ ख़रीदे उन्हें दुकान से तत्काल बाहर ले आयीं। सिर से पैर तक हरे कपड़े पहने एक पागल सी दिखने वाली बुढ़िया ने एक बार बस में उसकी तरफ देखकर ख़ुशी-ख़ुशी अपना हाथ हिलाया था। बहुत लंबा जामुनी कोट पहने एक गंजे आदमी ने तो एक दिन सड़क पर उससे हाथ मिलाया था और फिर बिना कुछ कहे चला गया था। इन सभी लोगों के बारे में सबसे अजीब बात यह थी कि जिस पल हैरी उन्हें ध्यान से देखने की कोशिश करता था वे न जाने कहाँ ग़ायब हो जाते थे।

स्कूल में हैरी का कोई दोस्त नहीं था। सब जानते थे कि डडली का गैंग ढीले-ढाले पुराने कपड़े और टूटा चश्मा पहनने वाले हैरी पॉटर से नफरत करता था, और कोई भी डडली के गैंग से पंगा नहीं लेना चाहता था।